सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणीविजयेते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरसमोदलता

विरचित

❀ द्वादश वाटिका विहार ❀

पाद टिप्पणी संयोजकः-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम
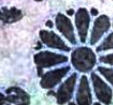
कोऊ रंग यन्त्र सो छोरैं । एकहि वार हजारन बोरैं ॥
दोउ दिशि पिचका छूटनलागे । सावन घन बरसत रसपागे
झपटहिं लपटहिं जुटहिं परस्पर । होय रहे रंगनसे तरवर ॥
भीजि महीन वसन रंगमाहीं । चिपके रस अंगन दरसाहीं ॥
प्यारी की दो सखी प्रवीनी । पिय के दल विह्वल करिदीनी
रंग गुलालन बरषा करिके । आँखन में बूका बहु भरिके ॥
यहि विधि दूनौ आगे झपकी । प्यारे दल पीछेतब खसकी ॥
निज दल विकल विलोकिपियारे। बोले रसमय बचन प्रचारे
जो हौ असल बाप की बेटी । तौ मम चोट सँभारहुँ जूटी ॥
अच्छे सावधान ह्वै जावो । पाछे मोहि न दोष लगावो ॥
सुनि बोली दोउ चतुरसयानी । तुमको लाल भलीमैं जानी
जौ हौ असल बापके बेटा । तौ जनि कछु तुम लावहु खोटा
लागे लाल चलावन पिचका । एकहि वार हजारन मुखका
अति लाघवता करैं पियारे। मानहु हाथ हजारन धारे ॥
मूठी भरि२ रंग गुलालन । आँखिन तकि२ मारत वालन
छूटि अलक लट मुखपै आवै । चंद मिलन जनु नागिनधावै
कुमकुम लेत उठावत ताड़त । काहू न लखैं खड़ी सब ताकत
सीय सखी दोउ चतुर प्रवीना । परन देइ चख रंग कनी ना
रंग चोट प्यारे की सहती । हरे हरे चलि आगे बढ़ती ॥
प्यारे को लखिमें नहि आयो । ये दोउ जाय पास नियरायो
एक दौरि गर पटुका दीनी । एकदौरि कर पिचका छीनी ॥

बड़े कहाहु वीर के बेटा। आज कहाँ वह गई रजेटा ॥
वसन झीन अंगन दरसाई। पिय बोले तब मुरि मुसुकाई ॥
छाती पै द्वै सिंह जमाई। नारी से को जीते भाई ॥
नारि सों हारि रहत जो कोई। उत्तम रस चाखत पै सोई ॥
बोली सो सुनु राजदुलारे। हौ तुम चतुर खिलारी प्यारे॥
पहिले तौ वीरता बघारौ। तिय वस ह्वै पाछे तुम हारौ ॥
सिय के चरनन सीस नवावो। तब तो मोसे छूटन पावौ ॥
पिय गर बिच पटुका सो डारी। लै आई बैठी जहँ प्यारी ॥
सिय चरनन में माथा दीजै। निज कसूर की माफी लीजै ॥
चले नवावन सिर ढिगप्यारी। प्यारी दौरि मिली अँकवारी
पियप्यारी सिंहासनराजे। युगछवि लखि सखियनमनगाजे

* दोहा *

यहि विधि फागुन चौकमें, करि होरी उत्साह।
सखिन सहित दंपति चले, जलक्रीड़ा की चाह॥

* इति फाग चौक विहार *

अथ जल विहार

* चौपाई *

मध्य बाग तड़ाग जो भारी। तिहि तट पै आये पियप्यारी॥
नाना रंगन कमल खिलेहैं। तेहि पर भँवरन गुंज रहे हैं॥
सर शोभा बिलोकि अनुरागे। जहँ तहँ जल में कूदन लागे॥
जल क्रीड़न लागे पियप्यारी। मत्त मतंग यथा अनुहारी॥
सखिन सहित सोहहिनवनागर। वारिमध्य गुनरूप उजागर
पिय कों कर सोंकर धरि कोई। जल अगाध में कूदे सोई॥
लखि जलमें छल वचन उचारी। पियपर कूदिपरी कोई नारी
कोउ तटसो कूदत जलमाहीं। कोउ मज्जन जल मध्यकराहीं
काइ कामिनि भुज जंत्रमझारी। रोकिलई पियल ल विहारी
कोउकर जल छिरकै पियअंगा। सींचहि अपर परस्पर संगा
कोउ कर पद जल ताड़न करहीं।
सिन्धु मथन सम धुनि सुनि परहीं॥
यहिविधि जलक्रीड़ा करि प्यारे सखिनसंग सिय राजदुलारे
जलके मध्य महल जो आहीं। शोभा ताको बरनि न जाहीं
तेहि महल आये दोउ जोरी संग सखिनके यूथ घनेरी॥
कुंजेश्वरी पोशाकें ल्याईं। नवल शृङ्गार सजी मन भाई॥
नख शिख लौं शृङ्गार सजोरी। सिंहासन बैठे दोउ जोरी॥
सखिजन निज शृङ्गार सँवारी। सेवा सौंज लिये सब ठाढी॥

कुंजेश्वरि व्यंजन बहुल्याई। विविध भाँति भोजन करवाई।।
बीरी दै पुनि अतर लगाई। आरति करि पुनि वलि२ जाई।।
आपस में सब विधि बरताई। शेष प्रसाद सखिन सबपाई।
कछु दिन तहाँ रहे दोउ जोरी। छन २ नव आनन्द बढ़ोरी
सखियन कौ बहु विधि सुख दैके।
चले महल तिन सौं सुख लै कै।।
शिबिकापर सखियन चहुँओरी। तामदान मधि मनहरजोरी
आये हेम महल के माहीं। जहँ छन २ नव सुख सरसाहीं।।

* इति जल बिहार *

❁ श्री महल में शयन सुख ❁

कनक भवन पर्यंक पर, राजत युगल किशोर।
विविध विनोद विलासमें, पगे रहत निशिभोर॥

छीर सिन्धु के मध्य में, संपा घन दोउ सोय।
तिन दोउन के मध्य में, मोती बरषा होय॥
हंस अवलि चहुँदिसि खड़ी, चूगि २ रस लेत।
सदा किनारे रहत है, और न जानत हेत॥

श्री गुरुदेव प्रसाद से, द्वादश बाग बिहार।
वरन्यो जो कछु हियफुरयो, सज्जन लेव सुधार॥
आश्विन मास सु द्वादशी, शुक्ल पक्ष रविवार।
रसिक गुरुन की कृपा ते, पूरन बाग बिहार॥

इति श्रीमती रसमोदलता जू रचित श्रीद्वादश वाटिका विहार रसकल्लोल समाप्तम्।

यहाँ तक मूल ग्रन्थ पूरा हुआ। आगे परिशिष्ट भाग में तड़ाग के मध्य वाले उन पाँचों आवरणों का वर्णन होता है, जिसकी चर्चा पूज्यपाद ग्रन्थकर्ता जू ने सातवें कक्ष के प्रारम्भ में की हैं। अगले पाँचों आवरणों वाले ग्रन्थांश के रचयिता रसिराज श्रीविदेहजाशरणजी महाराज हैं।

परिशिष्ट भाग

अथ अष्टम कक्ष

यूथेश्वरी आवरण

दोहा

नव तड़ाग बिच भूमि जो, प्रथमहि कीन्ह बखान।
ताकी रचना नवल अब, सुनिये रसिक सुजान॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम कोट चहुँ ओर सुहावा। सरके निकट देखि मनभावा।
विविध केलि के चित्र बनाये। सिंह पौरि चहुँ ओर सुहाये॥
सिय पिय अलिन सहित तहँ आये।
भीतर जाय अमित सुख पाये॥
भूमि गुलाबी रंग सुहाई। चित्र विचित्र सँवारि बनाई॥
षोडश बत्तिस चौसठ कुञ्जा। चहुँदिसि बने भरे सुख पुञ्जा।
यूथेश्वरि सब सुखद सुहाई। तहँ नित बसहिं नाम सुखदाई
अथ अग्र नाम सुनहु मनलाई। अली भाव रसप्रेम बढ़ाई॥

॥ अथ षोडश यूथेश्वरियों की नामावलि

१-श्रीरामानन्दाजी, २-श्रीमाधुरीजी, ३-श्रीमंगलाजी, ४-श्रीरतिवर्द्धिनीजी, ५-श्रीरसरूपिणीजी, ६-श्रीरम्याजी, ७-श्रीसुखदाजी, ८-श्रीस्वच्छताजी, ९-श्रीश्यामाजी, १०-श्री-साधुतीजी, ११-श्रीशृङ्गाराजी, १२-श्रीचतुराजी, १३-श्रीशेषाजी १४-श्रीहंसिकाजी, १५-श्रीशारदाजी और १६-श्रीशंकरीजी।

॥ अथ वत्तिस यूथेश्वरी नामावलि ॥

१-श्रीअह्लादिनीजी, २-श्रीज्ञानाजी, ३-श्रीपर्वीजी, ४-श्रीउज्ज्वलाजी, ५-श्रीकांचनीजी, ६-श्रीचित्राजी, ७-श्रीसुधामुखीजी, ८-श्रीहंसीजी, ९-श्रीकमलाजी, १०-श्रीविशदाक्षीजी, ११-श्रीचित्ररेखाजी, १२-श्रीचन्द्राननीजी, १३-श्रीप्रहंसीजी, १४-श्रीसुदर्शिकाजी, १५-श्रीमाधुर्याजी, १६-श्रीशालिनीजी, १७-श्रीशशिभद्राजी, १८-श्रीकर्पूरांगीजी, १९-श्रीनित्याजी, २०-श्रीहरिप्रियाजी, २१-श्रीमाधवीजी, २२-श्रीमनजीवाजी, २३-श्रीविद्याजी, २४-श्रीवागीशाजी, २५-श्रीरूपवतीजी, २६-श्रीसुविद्याजी, २७-श्रीसत्यवतीजी, २८-श्रीसन्तोषाजी, २९-श्रीचारुस्मिताजी, ३०-श्रीचार्वांगीजी, ३१-श्रीधीराजी और ३२-श्रीधात्रीजी ।

॥ अथ चौंसठ यूथेश्वरी नामावली ॥

१-श्रीसहजानन्दिनीजी, २-श्रीचारुरूपाजी, ३-श्रीचारुलोचनाजी, ४-श्रीउत्कर्षिणीजी, ५-श्रीक्रियाजी, ६-श्रीयोगाजी, ७-श्रीईशानाजी, ८-श्रीसत्याजी, ९-श्रीसुशीलाजी, १०-श्रीअतिशीलाजी, ११-श्रीहेमांगीजी, १२-श्रीसुखदाजी, १३-श्रीसुभद्राजी १४-श्रीक्षेमदाजी, १५-श्रीधराजी, १६-श्रीशोभनाजी, १७-श्रीशांताजी, १८-श्रीकान्तिमतीजी, १९-श्रीकेलिकोविद जी, २०-श्रीकिशोरिकाजी, २१-श्रीकांचीजी, २२-श्रीकोशलाजी, २३-श्रीकालीजी, २४-श्रीकंनादीजी, २५-श्रीकलावतीजी, २६-श्रीकंज-

लोचनाजी, २७-श्रीकुंजाजी, २८-श्रीकलिकाजी, २९-श्रीकोकिलाजी, ३०-श्रीकाशिकाजी, ३१-श्रीकृपालाजी, ३२-श्रीकृष्णाजी, ३३-श्रीसारिकाजी, ३४-श्रीकामदाजी, ३५-श्रीकृपावतीजी, ३६-श्रीसुखरूपाजी, ३७-श्रीचन्द्राजी, ३८-श्रीचंपकवरणीजी, ३९-श्रीचन्द्रिकाजी, ४०-श्रीचारुदर्शनाजी, ४१-श्रीचारुदंसीजी, ४२-श्रीचकोरिकाजी, ४३-श्रीचंपकमालाजी, ४४-श्रीदेववर्णिनीजी, ४५-श्रीदेविकाजी, ४६-श्रीदेवरूपिणीजी, ४७-श्रीदुर्गाजी, ४८-श्रीदामिनीजी, ४९-श्रीदैवज्ञाजी, ५०-श्रीगुणसागराजी, ५१-श्रीज्ञप्तिगुणज्ञाजी, ५२-श्रीनन्दाजी, ५३-श्रीनवलाजी, ५४-श्रीपरमाजी, ५५-श्रीपावनीजी, ५६-श्रीप्रेमप्रदाजी, ५७-श्रीप्रियंवदाजी, ५८-श्रीप्रज्ञाजी, ५९-श्रीमनोरमाजी, ६०-श्रीमोददायिकाजी, ६१-श्रीमानकोविदाजी, ६२-श्रीरहस्यज्ञाजी, ६३-श्रीसीमन्तिनीजी, और ६४-श्रीशान्तिरूपिणीजी ।

*** दोहा ***

यहि अष्टम आवरण में, कीन्हेउ विविध विलास।
कुञ्ज कुञ्ज प्रति जायकै, सबकी पूरे आस ॥

*** चौपाई ***

यहि विधि देखि चले पुनि आगे।
अलिन सहित दंपति रस पागे ॥

॥ इति अष्टम कक्ष विहार वर्णन ॥

अथ नवम कक्ष

✽ द्वादश उपवन आवरण ✽

✽ दोहा ✽

अब नौवाँ अबारण लखु, भूमि बैंगनो रंग ।
चहुँदिशिकोट विचित्रअति, निरखिहोत मन दंग ॥
द्वादश उपवन तासु मधि, सुमन नाम तेहिनाम।
सुनिये चित्त लगाय कै, हृदय होय बिश्राम ॥

✽ अथ द्वादश उपबनों के नाम ✽

✽ चौपाई ✽

कमल[१] गुलाब[२] मालती[३] वेली[४] ।
चम्पा[५] केतकि[६] जुही[७] चमेली[८] ॥
सेबति[९] केवड़ा[१०] नवल नेवारी[११] ।
तुलसी[१२] नवल नाम शुचि धारी ॥
और अनेक सुमन की जाती ।
ताके मध्य सोह सब भाँती ॥
द्वादश सर तेहि वन बिच सोहै ।
तिनके नाम सुनहु अब जो है ॥

*अमृत[१] जल[२] मधु[३] दूध[४] दहीके[५] ।
चन्दन[६] अतर[७] तेल[८] रस[९] हीके ॥
औषधि[१०] केसर[११] रंग गुलाबी[१२] ।
क्रम ही ते सर नाम जनावी ॥
नौका बहु सर मनि सोपाना ।
देखत बने न जात बखाना ॥
द्वादश गिरि तिहि सर बिच सोभित ।
मनि कहि तेहि के नाम निरूपित ॥

---

* उपर्युक्त वर्णन को इस प्रकार समझिये:—

१–कमल बन के मध्य में अमृत सरोवर हैं।

२–गुलाव बन में जल सरोवर है।

३–मालती बन के मध्य में मधु सरोवर हैं।

४–वेली वन में दूध सरोवर है।

५–चम्पा बन में दही सरोवर है।

६–केतकी वन में चन्दन सरोवर हैं।

७–जूही बन में अतर सर है।

८–चमेली बन में तैल तड़ाग है।

९–सेवती वन में रस सरोसर हैं।

१०–केबड़ा बन में सर्वौषधि सरोवर है।

११–नेवारी बन में केशर नीर परिपूर्ण कुण्ड है।

१२–तुलसी वन में गुलावी रंग जल पूर्ण सरोवर है।

+मानिक[१] मरकत[२] कुलिश[३] पीत[४] मनि।

पदुम[५] राग फाटिक[६] विद्रुम[७] गनि ॥

रविमनि[८] चन्द्र[९] हरित[१०] मनि चिंता[११]।

कौस्तुभ[१२] नवल नाम तेहि गिनता ॥

तेहि पर्वत पर बंगले द्वादश। कहि नहि जात बनाव सजेजस

सिय पिय अलिन सहित तहँ जावैं।

विविध विलास करहिं सुख पावैं ॥

यहिविधि देखि चले पुनि आगे। दशवें खंड जाय रसपागे॥

❀ दोहा ❀

यह परतर अलि ध्यान वर, सब ध्यानन करि ईश।

नारी बनि मुनि ध्यावहीं, लक्ष्मीपति गौरीश ॥

श्रीसतगुरु अलि दीन्ह मोहि, यह नव ध्यान अनूप।

जेहि ध्यावत नित होत दृढ़, अली भाव रस रूप ॥

॥ इति नवम कक्ष विहार वर्णन ॥

+अर्थात् कमल वन के अमृत सरोवर के मध्य में माणिक्य पर्वत है। उस पर्वत शिखर पर बंगला बना है। इसी क्रम से प्रत्येक सरोवर में पर्वत का ध्यान कीजिये।

रविमनि = सूर्यकान्तमणि। चन्द्रमणि = चन्द्रकान्तमणि पुनः चिन्तामणि। फाटिक = स्फटिक मणि।

॥ अथ दशवाँ कक्ष ॥

॥ द्वादश सेवा कुञ्ज आवरण ॥

❀ दोहा ❀

पुनि दशवें आवरण में, द्वादश सेवा कुंज ।
अष्टयाम नव कुंज में, रस वरषत सुख पुंज ॥

❀ चौपाई ❀

भूमि चहूँदिशि रँग नारंगी । सतचित आनँद नित्यअभंगी
चहुँदिशि कोट मनोहररचना । सिंहपौरि छवि आवन वचना
दुहरे कुंज नवल दरवाजे । कुञ्ज कुञ्ज प्रति अष्ट विराजे ॥
नव्वे अरु छैद्वार सुगनिये । चहुँदिशि देखि हिये विचअनिये
तिन के नाम सुनहुँ सुखदाई । रसिक सुजान कहहिं सब गाई
मंगल[१] कुंज मज्जना[२] गारा । नवल कलेऊ[३] कुंज सिंगारा[४] ॥
चौपर[५] कुंज सभा[६] सुख खानी । भोजन[७] कुंज शयन[८] रसदानी ॥
फाग[९] कुंज हिंडोला[१०] सुन्दर । केली[११] नाम सुरस[१२] कुंज वर ॥*

❀ दोहा ❀

यहि दशवें आवरण में, करि निवास ललि लाल ।
पुनि ग्यारहें आवरण को, चले संग लै वाल ॥

॥ इति दशवाँ कक्ष विहार वर्णन ॥

---

*आपके द्वादश सेवा कुंजों में से, यहाँ एक व्यारू कुंज कम है और उस के बदले चौपर कुंज बढ़ा हुआ है ।

अथ ग्यारहवाँ कक्ष

॥ षोडश महायूथेश्वरी आवरण ॥

*** दोहा ***

ग्यारहवां आवरण लखु, हरित रंग अँतराल।
चहुँदिशि कोट विराजहीं, रचना ललित विशाल

*** चौपाई ***

षोडश कुंज बने चहुँ ओरी। चारि २ दिग दिग प्रतिजोरी
षोडश सखी महायुथेसरी। तिहिमधि वसहिं नाम सुनुसोरी

॥ वार्ता ॥

इस ग्यारहवें आवरण में चहुँ दिशि षोडश कुंज हैं। प्रत्येक दिशा में प्रति चार चार कुंज हैं। उनमें षोडश महा-यूथेश्वरियाँ निवास करती हैं। उनके नाम सुनिये।

प्रथम पूर्व दिशा में श्री स्वामिनी श्रीचम्पकलता जू का कुंज है। यह हमारी (श्री विदेहजाशरण जी महाराज की) रक्षाचार्या जू हैं। उनसे दक्षिण:—१-श्रीस्वामिनी श्रीचन्द्रकला जू, २-श्रीविमला जू, ३-श्रीमदनकला जू, ४-श्रीविश्व-मोहिनी जू, ५-श्रीउर्मिला जू, ६-श्रीरूपलना जू, ७-श्री-चन्द्रावती जू और ८-श्री श्रीप्रसादा जू के निवास कुंज हैं।

ये श्रीराजकिशोरी जू की※ अष्ट यूथेश्वरी हैं। चार पूरब और चार दक्षिण दिशा में निवास करती हैं।

श्रीराजेन्द्रकुमार जू की अष्ट महायूथेश्वरीः—

१-श्रीचारुशीलाजी, २-श्रीहेमाजी, ३-श्रीक्षेमाजी, ४-श्री-बरारोहाजी, ५-श्रीपद्मगंधाजी, ६-श्रीसुलोचनाजी, ७-श्रीलक्ष्मणाजी, और ८-श्रीसुभगाजी। ये क्रमशः चार पच्छिम, चार उत्तर की ओर निवास करती हैं।

॥ इति षोडश महायूथेश्वरी नामावलि ॥

※ चौपाई ※

अलिन सहित विहरत पियप्यारी। कुञ्ज२ प्रति आनँद भारी
चंपकलता कुञ्ज इक नामा। सकल कामदायक सुखधामा॥
अलिनसहित सियपिय तहँआये। चंपकलता देखि सुखपाये
षोड़श भाँति पूजि सनमानी। कुंज मध्य बैठाई आनी॥
विविध भाँति भोजन करवाई। जल पियाइ मुखहाथ धोवाइ

※ दोहा ※

कोमलपट मुख पोंछिकर, फेरति सहित विलास।
अतर पान दै मालवर, निरखति सहित हुलास॥
चन्द्रकला के कुंज पुनि, शयन कीन्ह लालिलाल।
प्रेमलता गुरु कुंज होउ, सेवा सकल सँभाल॥
यहि प्रकार सब कुंज में, करि विहार ललिलाल।
पुनि द्वादश आवरण को, चले संग लै बाल॥

॥ इति ग्यारहवाँ कक्ष विहार वर्णन॥

※याद रहे कि यह श्रीअशोक वन की अष्ट महायूथेश्वरियाँ हैं। श्री कनक भवन की अष्ट महायूथेश्वरियाँ भिन्न हैं। सर्वेश्वरी श्रीमती चन्द्रकलाजी दोनों स्थल पर सर्व प्रधान हैं।

❋ अथ बारहवाँ कक्ष ❋

❋ शयन कुञ्ज और रासचत्वर ❋

पुनि द्वादश आवरण में, भूमि लसत नव रंग।
चहुँदिसि कोट विराजहीं, चित्र विचित्र अभंग॥

द्वार चारि चहुँ ओरसुहावन। अजिर विशाल मध्यमनभावन
द्वादश कोट यहाँ लगि गाये। नव खंडे चहुँ ओर सुहाये॥
चालिस आठ मुख्यदरवाजा। चहुँदिसि बने सुभग सबसाजा
और अनन्त द्वार चहुँ ओरी। रचना ललित वरनि कह कोरी
कोटिन सखी खड़ा प्रति द्वारी। कनक छड़ीकर बेंत सुधारी॥
यहि प्रकार चहुँओर निहारी मध्य अजिर लखिये छविभारी
सुमन वाटिका ललितसुहाई। अजिर मध्य चहुँदिसि मनभाई
वापी कुण्ड सरोवर कूपा। वेदी बंगले रौस अनूपा॥
निर्मल नीर सुधा छवि हारी। मनि सोपान घाट वर चारी॥
कोइ कमल खिले बहु रंगा। जल खग कूजत गुंजत भृङ्गा॥
सड़क बनी चहुँदिसि छविभारी। दुहुँदिसि वृक्षलगे युगधारी
त्रय संपति युत परसत धरनी। मनिमय आलवाल कलकरनी
ऋतु बसंत नित रहत लुभाइ। त्रिविध समीर सदा सुखदाई॥
भूमि चहूँदिसि सुमन बिछाये। बहु रँग अतर गुलाब सिचाये
विविध रंग की चिड़िया बोलहि। हंस कुरंग संग बहुडोलहिं
विविध भाँति के छुटत फुहारे। इकसत दुइसत धार हजारे॥
अजिर विसाल महाछबिछाई। कहँ लगि कहौं बरनि नहि जाई

कृपा अली गुरुदेव की, होय तो हिय दरसाय।
आन भाँति नहिं सूझई, कीजै कोटि उपाय ॥
कृपा होत अलि भाव सों, भाव रसिक गुरुहाथ।
ताते कुतरक छोड़ि सब, खोजि करिय नितमाथ॥
यहि विधि देखि अजिरअँगनाई। रचना अपर सुनहुँ मनलाई
अजिर मध्य इक बेदी भारी। कछुक ऊँच सब भाँति सँवारी
ता पर कुंज विशाल सुहावा। चतुरावृति चहुँ ओर बनावा॥
षोड़श सहस नवल दरवाजे। अष्ट दलान चहूँदिसि राजे ॥
चौंसठ सहस खंभ चहुँ ओरी। अष्ट पहल युग २ की जोरी॥
यह संख्या प्रति खंडहि जानो। द्वादस खंड उच्च नभ मानो
चित्र विचित्र चांदनी तानो। मुक्ता वन्दनवार सोहानो ॥
केलि चित्र तसबीर सुहाई। कुंज मध्य चहुँदिसि छविछाई॥
गोख झरोख ताख अलमारी। भीति चित्र बहुभाँति सबारी
मनि खूंटो भीतर चहुँओरी। फूलमाल मनिमाल करोरी॥
परदापरे ललित चहुँओरहिं। किंकिनि बाजहिं जबअलिछोरहिं
कोमल फरस बिछाई नीचे। अतर गुलावन से सब सींचे ॥
क्रीड़ा के बहु सौज सजाई। छत्र चँवर व्यजनादि धर ई ॥
अमित सिंहासन चौकी कुरसी। कुञ्ज निकुञ्ज धरे छवि दरसी
खंड २ प्रति कुंज सुहाये। कुञ्ज कुञ्ज प्रति पलँग बिछाये ॥
कुञ्ज कुञ्ज प्रति तार लगाई। छन छन में सब खबर जनाई॥
कोठे पर को चढ़न हित, बहु निसेनि छवि छाय।
पग धरते छन मात्र में, बिनु श्रम देत चढ़ाय ॥

कनक कपाट बज्रमनि कीलैं। चौखट बाजू लाल हरीलैं ॥
कुंडी झाड़ बहुत रंग झूलहिं। सीसा डाल लट्टू बहु हीलहिं॥
मेहरावैं चहुँ ओर सुहाहीं। कहँ लगि कहौं बरनि नहि जाहीं

यहि विधि निचले खंडको, वरनेउँ मति अनुसार।
पुनि ऊपर बहु खंड की, रचना ललित अपार ॥

ध्वज पताक ऊपर फहराई। कलस कंगूरे अति छवि छाई ॥
द्वादस खंड भिन्न रंग केरे। अति आनन्द होत जेहि हेरे ॥
छत ऊपर की रचना भारी। अति सुन्दर चहुँ ओर सँवारी ॥
सुमन वाटिका ललित लगाई। वरनि न जाय महाछवि छाई
मनि सर कुण्ड बने अतिसुन्दर। कल से जाय भरै जल ऊपर
तेहि जलके बहु छुटै फुहारे। गिरहिं उपरते बहु जल धारे ॥
अमित नली लागी चहुँओरी। तेहिमग होइ जलधार बहोरी
महल सैल जनु झरना झरई। नीचे गिरि बहु कुंडन भरई॥
विटप अशोक एक तेहि ऊपर। छत्राकार विशाल मनोहर ॥
कनकमयी स्कन्ध सुहाये। किसलय हरित मनिन छवि छाये
पद्मराग मनि फूल मनोहर। मरकत मनिके फल अति सुन्दर
तेहितर एकसिंहासन मनिको। सहस कमल दल चतुर खंडको
भानुअग्नि ससि मुद्रातीनी। ज्योतिजगामग चहुँदिसिझीनी
मध्य कर्निका सुन्दर सोहै। वरनि न जाय देखि मन मोहै ॥
फरस सुकोमल जगमगज्योति। चहुँदिसिबिछे लगेमनिमोती
स्याम पीतरंग तकिया सुन्दर। चहुँदिसि धरी नवल तेहिऊपर
नीचे फरस विचित्र बिछाई। चहुँदिसि कुरसी सजी सुहाई ॥

ऊपर ललित चांदनी तानी। मुक्ता वन्दतवार सोहानी ॥
खंभ हजारन चहुँदिसि मनिके। मेहरावैं भावैं अति जीके ॥
कुंडी झाड़ डोल बहु सीसा। अमित प्रकार सजे चहुंदीसा॥
मनिमय दीप कलस बहु राजे। रंभा ध्वज पताक बहुसाजे॥
चहुँदिसि सुमन वाटिका सोहै वरनि न जाय देखि मनमोहै

यहिविधि चहुँदिसि देखिछबि, चढ़ि विमान ललिलाल।
छत के ऊपर आय दोउ, उतरे सँग लै बाल ॥

द्वादस नवल खंड के ऊपर। अलिन सहित राजैं दोउ सुन्दर
उच्च सिंहासन बैठे सोहैं। चहुँदिसि वन असोक छवि जोहैं
द्वादस कोट बने चहुँओरे ध्वज पताक बहु कलस कंगूरे ॥
खंड २ प्रति पुल चहुँकोने। वरनि न जाइ नवल छबि लोने
यहिविधि चहुँदिसिकी छविगाई। युगलसिंगार सुनहुमनलाई
दंपति कनक सिंहासन राजैं, कोटिन रति मन्मथ लखिलाजैं
*स्याम गौर छवि बरनि न जाई। मति अनुसार कहौं कछुगाई
... ...
... ...

लली लाल तन स्यामल गोरे। मनहुँ प्रीति सिंगार इक ठौरे॥
किधौंजलद सँगदामिनि दरसै। अकि अहलाद सक्तिपियपरसै
द्विभुजकिसोर नवल नितप्रीतम। वष त्रयोदस सोय * नूपम॥

---

*इस पंक्ति के बाद पूज्य कवि ने बड़ा विस्तार के साथ श्रीयुगलकिशोर जू की नख शिख झाँकी बड़े ही मनोहर ढंग से लिखी है। खेद है ग्रन्थ विस्तार भय से हम यहाँ वह संदर्भ समाविष्ट नहीं कर पाये।

जेहिविधि सियसिंगारसँवारी। तेहिविधिअलिगननिजतनुधारी
चन्द्रकला विमला सुखसाली। चारुसिला सुभगादिक आली
सेवा साजि खड़ी चहुँओरी। मुग्धा मध्या प्रौढ़ किशोरी ॥
कोइ स्यामल कोइ गौर सहेली। दम्पति रूप रंगी अलबेली
भूषन बसन सजे नव अंगा। नील पीत अरुनादिक रंगा ॥
अंग सुगंध चलहि बहुभाँती। दम्पति रुख जोहै रसमाती ॥
जुगल सखी सिर छत्र फिरावै। जुग२ दुहुँदिसि चँवर चलावै
व्यजन लिये जुग२ रंग भीनी। बहुसखि पानदान करलीनी
अतरदान बहु सखि कर धारी। पीकदान बहु लीन्हें झारी ॥
फल मेवा पकवान मिठाई। बहु सखि लीन्हें थार सजाई ॥
बहुसखि दरपन निजकर धारी। छड़ी बेंत बहुलिये सँवारी ॥
बहु सखि फूल मालकर धारी। पंखी बहुत लिये मनहारी ॥
कमल गेंद बहु लिये सिया के। धनुष वान बहुलिये पियाके
भूषन बसन लिये बहु सोहैं। सावधान दम्पति रुख जोहैं ॥
बहु सखि बाजन विविध बजावैं। गान तान बहुभाँति सुनावैं
बहुसखि नाचति भावदिखाई। कहँलगि कहौं बरनिनहिंजाई
मध्यसिंहासन सियपिय राजैं। यहिविधि साज सजे सुखसाजैं
अपर अली सोहैं चहुँओरी। मंडलकार अनन्त करोरी ॥
द्वादसखंड महलके ऊपर। यहिविधि राजत सियपिय सुन्दर
बनअसोक छवि चहुँदिसिजोहैं। दंपतिअलिन सहिततहँसोहैं
यहिविधि जुगलध्यान जे धरहीं। भवसागर गोपद इव तरहीं
यहि सुख लागि संत जे रहहीं। संतत परानन्द ते लहहीं ॥

मुक्तिआदि फल चितवहिनाहीं। यहिसुख मगनरहैंजगमाहीं
जोग जग्य जप दान रतेजे। यहि पथ नहिं हरि विमुख भयेते
निगम अगम जे धर्म सहायक। यहि रस करते पुष्ट सुभायक

❁ सोरठा ❁

सब तत्वन कर सार, सीताराम सु नाम वर।
रूप सुचरित उदार, सतचित आनँद नवल नित॥
धाम सुरस आगार, श्रुति पुरान विख्यात जग।
माया मन गुन पार, कृपासिन्धु जन भाव बस॥
वन असोक सु विलास, ध्यान नवल वर नाम यह।
द्वादस सुभग विलास, बरनि कहेउँ यहि ग्रन्थ मँह॥
कहहिं सुनहिं मन लाय, वन विलास नव चरित यह।
बसहिं हृदय तेहि आय, परिकर युत ललिलाल नित॥
राखव सदा छिपाय, बन विलास ललि लाल कर।
गोप गोपतम भाय, बिनु अधिकार न भाषिये॥
संवत खंड सुद्वीप, अङ्क ब्रह्म लिखि लेहु गुनि।
चैत सुदी ऋतु धीप, नौमी तिथि गुरुवार सुभ॥
भये ग्रन्थ यह पूर, प्राननाथ के जन्म दिन।
सद्गुरु सदन के ऊर, अवधपुरी श्रीसरजु तट॥
नाम रूप गुन ध्याय, 'प्रेमलता' सुखधाम बसि।
सद्गुरु कृपा सुपाय, शरनविदेहजा मगन नित॥

॥ इति श्रीअशोक वाटिका विलास सम्पूर्णम्॥

श्रीरसमोद साहित्य के प्रकाशित ग्रन्थ :-

१--श्रीरसमोद लताष्टक मूल।

२--श्रीरसमोद लताष्टक सटीक।

३--श्रीरसमोद लीलामृत।

४--श्रीमालिनी लीला।

५--श्रीमहारास लीला।

६--श्रीमान लीला।

७--तत्सुख सुखित्व प्रकाशिनी लीला।

८--श्रीरसमोद माधुरी।

९--श्रीरसमोद चरितामृत।

१०--द्वादश वाटिका बिहार।

प्राप्ति स्थान—

श्री नृपनन्दन शरणजी

श्रीहनुमत निवास, श्री कोठे पर, श्रीअयोध्याजी।

श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी।